भारत में सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक : एक विश्लेषण

डॉ० निशांत शेखर

सहभागिता के संरचनात्मक प्रबंध भले ही मताधिकार के रूप में दृष्टिगोचर होते हों, किन्तु जहां तक गहन सहभागिता का प्रश्न है, बहुत कुछ कार्य होना बाकी है। असमानताएं, भाई–भतीजावाद, राजनीति का अपराधीकरण, लचर कानून व्यवस्था के होते हुए क्या सहभागिता को वास्तविक बनाया जा सकता है। सामाजिक परिवर्तन के विषय में होने वाला प्रत्येक चिंतन सहभागिता के तत्त्व की समीक्षा के बिना संभव नहीं है। सामाजिक परिवर्तन में सहभागिता का एक पक्ष यदि राजनीतिक है तो दूसरा सामाजिक, यदि मतदान प्रक्रिया को राजनीतिक पहल मानें तो सामाजिक स्तर पर उसका साथ देने के लिए जन संचार, साहित्य, जन वार्ता का होना बहुत आवश्यक है। जयाल के अनुसार सामाजिक स्तर पर नागरिकों के बीच परस्पर सहभागिता की भावना होना, विभिन्नता के प्रति सौम्य रहना, सचेत नागरिकों का समान होना सहभागिता व सामाजिक परिवर्तन को संभव बना सकते हैं।